# पहाड़ों में बसा आदमी

*ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित*

एक बार गेयो नाम का एक आदमी था। उसने निश्चय कर लिया कि बस बहुत हो गया, अब उसे समाज से कुछ दिन का विराम चाहिए। वह थक चुका था — उसके कार्यस्थल पर लोगों के साथ उसके संवाद उलझे हुए थे, परिवार में गलतफ़हमियाँ थीं, अपने और लोगों के बीच सहमति पाने के लिए हर रोज़ उसे संघर्ष करना पड़ रहा था। अपनी इस कठिन परिस्थिति के बारे में उसने अपने मित्र को बताया जो उसका सलाहकार भी था। तब उसके मित्र ने उसे प्रकृति में एक लम्बी सैर पर जाने की सलाह दी, यह सोचकर कि पर्वतों और वनों की निस्तब्धता, झीलों और नदियों की प्रशान्ति गेयो की मनःस्थिति के लिए अच्छी रहेगी, इससे उसके मन का बोझ थोड़ा हल्का हो जाएगा।

गेयो को यह विचार पसन्द आया। उसने सोचा, "हाँ, सभी व्याकुलताओं और चिड़चिड़ाहट से दूर, एकान्त में अपना समय व्यतीत करना बेहतर रहेगा।"

गेयो, दक्षिण अमरीका के छोर पर स्थित एक छोटे नगर, पेटागोनिया में रहता था। खोज करने के लिए वहाँ प्राकृतिक सुन्दरता की कोई कमी नहीं थी। वह तुरन्त निकल पड़ा, सूर्य के प्रकाश से जगमगा रही घुमावदार पहाड़ियों और फ़िरोज़ी रंग की टेढ़ी-मेढ़ी छोटी नदियों के किनारे से होते हुए वह जा रहा था। कुछ क़दम चलने के बाद वह रुकता और दूर खड़े पर्वतों की सराहना करता; उनके भव्य शिखर, मौसमों के प्रभाव से चट्टानों पर पड़ी काट उसे आश्वासन का सन्देश दे रही थीं। अगर वहाँ कुछ था तो बस गेयो और बड़े-खुले मैदान। ज़िन्दगी इससे बेहतर हो ही नहीं सकती थी।

अपनी सैर के कुछ घण्टों बाद, गेयो नरम घास की एक छोटी पहाड़ी पर पहुँचा, जहाँ वह थोड़ा आराम कर सकता था। यहाँ से जो परिदृश्य दिखाई दे रहा था, वह बड़ा सुन्दर और मन्त्रमुग्ध कर देने वाला था। उसके बाईं ओर, बैंगनी रंग के ल्यूपिन के फूल फैले हुए थे। उसके पीछे भव्य शिखर थे, और ऊपर — दूर-दूर तक फैला नीला आकाश था। एक भी बादल नहीं दिखाई दे रहा था।

परन्तु यह अधिक समय तक नहीं रहा। गेयो घास पर लेटा हुआ था, उसे अपने चेहरे पर दोपहर के सूर्य की गर्माहट महसूस हो रही थी, और तभी उसने देखा कि एक बड़ा रूई के गोले जैसा बादल धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। एक क्षण बाद, बादल ने सूर्य को ढँक लिया।

“एएएएए. . .” गेयो ने कहा। “अरे, ओ बादलों—हट जाओ। यहाँ से चले जाओ!”

फिर, कहीं पहाड़ियों के पार से, उसे एक आवाज़ सुनाई दी।

“जाआआआआ-ओओओओओओ. . .” यह सुनकर ऐसा लगा जैसे यह किसी आदमी की आवाज़ हो — जो कहीं पहाड़ों में, किसी पर चिल्ला रहा हो।

गेयो को उत्सुकता हुई, उसने सोचा कि वह उस आदमी को पुकारेगा।

“कौन है वहाँ?”

*“कौन है वहाँ? कौन है वहाँ? वहाँ, वहाँ, वहाँ, वहाँ. . . .”*

“नहीं, सच में, कौन हो तुम?”

*“तुम, तुम, तुम, तुम, तुम. . .”*

“*मैं* नहीं, तुम!” गेयो झुंझलाकर बोला। ज़रूर, पहाड़ों में रहने वाला वह आदमी मूर्ख ही था!

*“मैं, मैं, मैं. . .तुम, तुम, तुम. . .”*उस आवाज़ ने उत्तर दिया।

गेयो ने सोचा, “अब तो यह बस मेरा मज़ाक उड़ा रहा है। मैं अभी इसे बताता हूँ।”

तो गेयो ने अपने सीना तान लिया, छाती फुला ली और अपनी कड़क आवाज़ में ज़ोर देकर चिल्लाकर कहा :

“बन्द करो!”

और यह क्या! पहाड़ों में वह आदमी तो तैयार ही बैठा था। इशारा मिलते ही उसका जवाब आया : *“बन्द करो, करो, करो, करो. . .”*

गेयो के लिए यह अब बहुत हो रहा था। “आआआआआआआआहहहहह!” वह ज़ोर-से चिल्लाया।

और जैसा सोचा था, वैसा ही जवाब आया —*"आआआआहहह"*— लेकिन तब तक गेयो ने उस आदमी को भला-बुरा कहना, अपमान करना शुरु कर दिया था। उससे तर्क करने का कोई मतलब ही नहीं था। तो वह अपमान क्यों न करें?

"मूर्ख!" गेयो चिल्लाया। "तुम उपद्रवी! बेअक़्ल!"

निस्सन्देह, वे अपमानजनक शब्द गेयो की ओर ही प्रतिध्वनित हुए, उनकी आवाज़ और शोर सौ गुना बढ़ गया। गेयो उलझन में पड़ गया, उसने गुस्से से चारों ओर देखा; कुछ पल पहले ही तो ये पहाड़ियाँ और पर्वत इतने लुभावने लग रहे थे पर अब ऐसा लग रहा था कि वे अब उसे नीचा दिखा रहे हों, कटु स्वर खाली मैदानों में गूँज रहे थे।

उसने सोचा, "इस आदमी ने मुझसे इस तरह बात करने की हिम्मत कैसे की! " *"मुझसे*—गेयो से! और देखो, इसने क्या कर दिया ! इस ख़ूबसूरत स्थान को मेरे लिए इसने बर्बाद ही कर दिया।"

एक आख़िरी बार, उसने तीखी नज़र से पहाड़ों की तरफ़ देखा। गेयो मुड़ा और सीधे घर की ओर चल दिया। चलते-चलते वह अपने आपमें बड़बड़ाता जा रहा था, उसके दिमाग़ में विचार मक्खियों की तरह भिनभिना रहे थे। उसे महसूस हुआ कि उसका दिल सिकुड़ रहा हो और और मानो उसके आस-पास लाखों दीवारें न जाने कहाँ से अचानक खड़ी हो गई हों।

वह घर की ओर ले जाने वाले धूल-मिट्टी वाले रास्ते पर चलने लगा। जैसे ही वह आगे बढ़ा, उसने देखा कि सामने से उसका मित्र उसी की ओर आ रहा है।

उसके मित्र ने कहा, "गेयो! मैं तुमसे ही मिलने आया था, यह देखने कि तुम अपनी सैर से वापस आए हो या नहीं। अरे, लेकिन — क्या हुआ?" मित्र ने गेयो के चेहरे के भाव देखे। उसका चेहरा उन पर्वतों की तरह ही कठोर लग रहा था जहाँ से वह अभी वापस आ रहा था।

"तुम *विश्वास* ही नहीं करोगे!" गेयो ने कहा। उसने बताया कि क्या हुआ था, वह कैसे पहाड़ियों में केवल अपने आप में ही मस्त था, प्रकृति के साथ एक हो रहा था, और तभी एक अशिष्ट अजनबी वहाँ टाँग अड़ाने लगा।

गेयो का मित्र बड़े ध्यान से सुन रहा था, हँसी रोकने के लिए वह अपने होंठ दबा रहा था। क्षणभर के लिए उसने कुछ नहीं कहा। और फिर उसने अपने हाथ गेयो के कन्धों पर रखकर मृदुलता से कहा,

“गेयो, तुम एक बार फिर से कोशिश करके क्यों नहीं देखते? उन्हीं पहाड़ों पर वापस जाओ। तुमने खुद ही तो बताया कि तुम्हें वहाँ कितना अच्छा लगा, मेरा मतलब है, पहाड़ों के उस आदमी साथ उस बुरी घटना के पहले।”

गेयो ने गुस्से में जवाब देने के लिए पहले ही अपना मुँह खोल लिया था। उसके मित्र ने हल्के-से मुस्कराते हुए गेयो को रोकने के लिए अपना एक हाथ ऊपर किया और आगे कहा :

“गेयो, बस फ़र्क़ यही होगा कि इस बार जब तुम जाओ, तब मैं चाहता हूँ कि तुम वह कहो जो खुशी देता हो। वह कहो जो तुम सुनना चाहते हो, वह कहो जो तुम चाहते हो कि कोई तुमसे कहे। मुझे यह लगता है कि यदि तुम ऐसा करोगे तो पहाड़ों का वह आदमी तुम्हें इतना ज़्यादा परेशान नहीं करेगा।”

गेयो ने तुरन्त अपना मुँह बन्द कर लिया और अपनी एक भौंह चढ़ा ली। वैसे उसे लग नहीं रहा था कि ऐसा करने से कुछ ज़्यादा फ़र्क़ पड़ेगा। लेकिन फिर, उसने सोचा कि उसके पास खोने के लिए है ही क्या? या तो पहाड़ों का वह आदमी उसे परेशान करेगा या फिर शहर में कोई ओर। कम से कम पहाड़ों में उसे सुन्दर-सुन्दर दृश्य तो देखने को मिलेंगे।

तो, वह पैर घसीटते हुए वापस जाने लगा, किन्तु इस समय वह पहली बार जितना उत्साहित नहीं था। आख़िरकार, वह उसी नरम घास की पहाड़ी पर आ पहुँचा जहाँ उसने थोड़ा आराम किया था। उसके बाँईं ओर ल्यूपिन के फूल थे, और ऊपर विशाल नीला आकाश था। कुछ पल वह शान्त बैठा रहा। उसे अपने शरीर में साँसें भी महसूस हो रही थीं। उसने चारों ओर फैले रंगों और घाटियों पर नज़र डाली।

उसके मन पर से बोझ, जो उसे पता ही नहीं था कि वह है, अब हल्का होने लगा। “सुन्दर” पहाड़ों को निहारते हुए, उसने धीमी आवाज़ में कहा।

और फिर, गेयो को अपने दोस्त की सलाह की याद आ गई।

“सुन्दर,” उसने फिर से कहा; इस बार अधिक ऊँची आवाज़ में ताकि सभी पर्वत, पहाड़, घाटियाँ सुन सकें।

*“सुन्दर,”* एक दिव्य आवाज़ ने गाकर दोहराया। *“सुन्दर, सुन्दर, सुन्दर, सुन्दर. . .”*

गेयो के चेहरे पर एक मुस्कान आ गई। यह कितनी सुरीली ध्वनि थी! वह उन सभी अच्छे विचारों को सोचने लगा जिन्हें वह उच्च स्वर में सुनना चाहता था, उन सभी उदार भावों के बारे में सोचने लगा जो वह चाहता था कि कोई उससे कहे। एक के बाद एक, वह उन विचारों को बोलने लगा, उसकी आवाज़ में उत्साह बढ़ने लगा, उल्लास भी बढ़ने लगा। हर बार, पहाड़ों वाला वह आदमी उसके लिए प्रत्युत्तर में गा देता। या फिर — क्या वे स्वयं पहाड़ ही थे जो गा रहे थे? क्या वह आकाश था या धरती थी जो गा रही थी?

उस ध्वनि ने गेयो को घेर लिया, वह उसके पूरे अस्तित्व में घूम रही थी, तभी उसके मन में अपने मित्र और सलाहकार के बारे में विचार आया, वही जिसने उसे पहाड़ों में दोबारा सैर करने की सलाह दी थी। गेयो के मन में इस बुद्धिमान और निष्ठावान मित्र के प्रति प्रेम उमड़ आया और उसके होठों पर कृतज्ञता का एक भाव छा गया। सच कहें तो, वह अपने जीवन में उपस्थित सभी लोगों के बारे में एक नवीन स्नेह से सोचने लगा। उन सभी के लिए उसके मन में जो भी प्रशंसा भाव था, उनके जिन गुणों की वह सराहना करता था, उनके साथ में उसे जो अच्छाई महसूस होती थी, उन सभी बातों को वह उसे व्यक्त करने लगा।

सब ओर सकारात्मकता छा गई थी, पहाड़ों में गूँज रही थी — उसकी असंख्य ध्वनियाँ एक-दूसरे में ऐसे तरंगित हो रहीं थी मानो कोई दिव्य सुरीली घण्टियाँ झंकृत हो रही हों। इस ध्वनि के स्पन्दन की शक्ति इतनी प्रबल और प्रत्यक्ष थी कि गेयो हाथ बढ़ाकर उसे स्पर्श कर लेना चाहता था।

अतः, वह वहीं खड़ा रहा, पहाड़ों वाला यह आदमी, पेटागोनिया के महान विस्तार के सामने अपनी बाहों को फैलाए खड़ा था। वह वहीं खड़ा रहा, उसका मन संगीत में सराबोर . . .। वह वहीं खड़ा रहा, उसका मन मौन में लीन . . .।

© २०१९ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।